कविताओं के रंग से रंगी भाषा की कक्षा

– अनुपमा भट्ट

कविता भाषा सिखाने का एक समृद्ध, रुचिपूर्ण एवं आनन्दमयी विधा है, इस विधा के माध्यम से बच्चे विषय-वस्तु से सक्रिय रूप से जुड़ने की कोशिश करते हैं। जिससे उनको सीखने-सिखाने की प्रक्रिया बोझिल नहीं लगती और वे भयमुक्त वातावरण में स्वतन्त्र रूप से सीखते हैं।

प्रारम्भिक भाषा के प्रोग्राम के अन्तर्गत भाषा सीखने से सम्बन्धित विभिन्न आयामों से अवगत होने का अवसर मिला। यह प्रोग्राम 12 सप्ताह चला जिसमें हमने कक्षा सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियां जैसे– शुरुआती एवं सार्थक बातचीत, कविता विधा, चित्र विधा, कहानी विधा, नाटक विधा, खेल विधा, चित्र विधा, प्रिन्ट रिच वातावरण, बाल शोध मेला आदि विषयों पर चर्चा–परिचर्चा की। सभी प्रतिभागियों ने अपने–अपने कक्षा अनुभवों से अवगत कराते हुए इस प्रोग्राम को एक सार्थक रूप दिया।

कविता विधा

हमारे स्कूलों में बच्चे विभिन्न प्रकार के वातावरण से आते हैं। बच्चों के घर के वातावरण एवं स्कूल के वातावरण में अन्तर आता होता है। हम उनके साथ बातचीत के माध्यम से जुड़ते हैं जिससे वे इस नये वातावरण में समायोजन कर सकें। छात्रों को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ने के लिए एक रुचिपूर्ण वातावरण बनाना पड़ता है। इस प्रक्रिया में बच्चों को कविताएं एवं गीत सबसे अधिक प्रिय होते हैं।

कविता भाषा सिखाने की एक समृद्ध, रुचिपूर्ण एवं आनन्दमयी विधा है। इस विधा के माध्यम से बच्चे विषय–वस्तु से सक्रिय रूप से जुड़ने की कोशिश करते हैं। जिससे उनको सीखने–सिखाने की प्रक्रिया बोझिल नहीं लगती और वे भयमुक्त वातावरण में स्वतन्त्र रूप से सीखते हैं।

कविता का चयन

शुरुआती कक्षाओं में कविता पाठ और कविता सुनना–सुनाने में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. कविताएं छोटी हों।
2. सरल शब्द एवं तुकान्त हों।

3. बच्चों के परिवेश पर आधारित हों।
4. रुचिपूर्ण एवं आनन्दमयी हों।
5. बच्चों के अनुभवों पर आधारित हों।
6. भाषा–कौशलों का विकास कर सकें।
7. छात्रों की कल्पना शक्ति बढ़ाने वाली हों।
8. लोक गीतों की अधिकता हों।
9. चित्रों की अधिकता हो।
10. मानसिक स्तर के अनुरूप हो।

कविता विधा से शिक्षण कार्य के शुरुआती अनुभव

जब हम किसी कार्य को करते हैं तो उसके पीछे कुछ

उद्देश्य होते हैं। मैंने भी भाषा सीखने–सिखाने के लिए कविता विधा को माध्यम बनाया और शिक्षण कार्य किया। जिससे रुचिपूर्ण एवं आनन्दमयी ढंग से भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। शुरुआत में बच्चे कविता को केवल एक आनन्दमय गीत के रूप में ले रहे थे और कविता के लय, ताल एवं सुर तक ही सीमित थे, लेकिन कविता में छिपे भाषायी ज्ञान (वर्ण, शब्द, मात्रा) को समझ नहीं पा रहे थे। जिससे कविता विधा द्वारा भाषा शिक्षण अर्थपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण नहीं हो पा रहा था।

कविता द्वारा भाषा शिक्षण की नई रणनीति

मैंने कविता को भाषा सीखने–सिखाने में प्रत्यक्षता से जोड़ने का प्रयास किया। इसके लिए कविता का शीर्षक, वर्ण, शब्द एवं मात्रा पहचान पर जोर दिया गया। बच्चों को समझकर सीखने की ओर आकर्षित किया।

शीर्षक की समझ– कविता पढ़ाने से पहले कविता से सम्बन्धित चित्रों पर प्रश्नावली तैयार की और बच्चों को पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए कविता के प्रति अर्थपूर्ण ढंग से रूचि पैदा की गयी।

वर्ण पहचान– वर्ण पहचान के लिए प्रत्येक कविता से कुछ वर्णों को लेकर काम किया गया। वर्णों की स्थाई पहचान के लिए फ्लैश कार्ड का प्रयोग किया तथा ध्वनि उच्चारण के लिए वर्ण से शुरू होने वाले शब्दों की सूची बनायी जिसमें बच्चों के परिचित शब्दों को प्रमुखता दी गयी।

शब्द पहचान– शब्द पहचान के लिए शुरुआत में कविता में से परिवेश से जुड़े कुछ शब्दों को लेकर काम किया। उन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखा, उनसे मिलते–जुलते शब्द बनाये, शब्दों से छोटे–छोटे वाक्य बनवाए और उन शब्दों से सम्बन्धित छात्रों के पसंद के शब्द भी श्यामपट्ट पर लिखें। छात्रों ने शब्द लिखकर 'पढ़ने में रुचि दिखायी।

मात्रा पहचान– मात्रा पहचान के लिए एक कविता में से एक मात्रा को लेकर काम किया गया। उस मात्रा की पहचान के लिए विभिन्न गतिविधियां (फ्लैश कार्ड, ध्वनि उच्चारण, शब्द बनाना, मिलते–जुलते शब्द) बनवायी गईं।

शब्द भण्डार– विभिन्न कविताओं को पढ़ने–लिखने के पश्चात बच्चों का कई नए शब्दों से परिचय हुआ।

कविताओं की रचना– कविताओं की समझ आ जाने के पश्चात बच्चों ने अब स्वयं भी कविताएं बनायी।

कविता द्वारा भाषा शिक्षण

पानी बरसा छम–छम–छम
ऊपर छाता नीचे हम
छाता लेकर निकले हम
साथियों संग नाचे हम
राधा नाची, राम नाचा
उनके साथ में मैं भी नाचा

मौखिक प्रश्न

1. क्या आपने कभी बारिश देखी?
2. आपको बारिश का मौसम कैसा लगता है?
3. बारशि होने पर क्या ओढ़ते हैं?
4. आप बारिश में क्या करते हैं?
5. बारिश का नाम सुनकर आपके मन में क्या–क्या बातें आती हैं शब्दों में बताइये?
6. चित्र में आपको क्या–क्या दिख रहा है?

वर्ण पहचान

न, म, च

न– नल, नथ, नगर, नमक, मन

म – मन, मत, मग, कम, हम

च– चल, चख, नाच, चार

शब्द पहचान

पानी, छाता, छम, नाचे, हम

पा + नी हम
छा + ता नाचे
छ + म पानी
ना + चे छाता
ह + म छम

मात्रा पहचान

आ की मात्रा
मिलते जुलते शब्द

छाता	पाता	खाता
हम	दम	कम
पानी	रानी	ठानी
नाचा	माचा	ताचा

आकलन

1. कविता की पक्तियों में से खाली स्थान भरिए–
——— बरसा ——— ——— ———
——— लेकर निकले ———
साथियों संग ———
2. कविता में 'आ' की मात्रा पर गोला लगाइए
3. निम्न वर्णों से शब्द बनाइए–
न –
म –
च –
4. निम्न लिखित शब्दों से छोटे–छोटे वाक्य बनाइये–
छाता–
पानी–
हम–
छम–

कविता शिक्षण में चुनौतियां

शुरुआती समय में मुझे कविता विधा से शिक्षण कार्य करने में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। बहुकक्षीय शिक्षण के कारण एक कक्षा को नियमित ढंग से शिक्षण करने में दिक्कतें आ रही हैं।

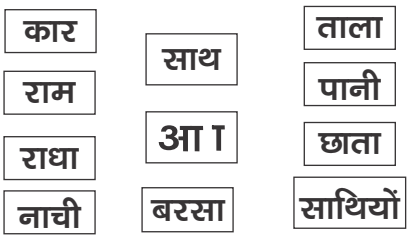

कार साथ ताला
राम पानी
राधा आ ा छाता
नाची बरसा साथियों

बाद में शिक्षण के दौरान फ्लैश कार्ड, चार्ट, वर्किंग मॉड्यूल और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को पढ़ने–लिखने के प्रति आकर्षित किया गया और पढ़ने की आदत का विकास किया।

अब कविता विधा से सीखना–सिखाना एक नियमित पठन प्रक्रिया का हिस्सा बन गया।

कविता विधा से शिक्षण के लाभ

- समझकर अर्थपूर्ण पढ़ना
- भाषायी कौशलों का विकास
- लेखन क्षमता का विकास
- कविता बनाना/लिखना
- शब्द भण्डार में वृद्धि
- वाक्य रचना का विकास

इस प्रकार कविता विधा द्वारा भाषा शिक्षण करवाना एक रुचिपूर्ण अनुभव एवं गतिविधि है जिसके माध्यम से बच्चे सार्थक एवं अर्थपूर्ण ढंग से भाषा से जुड़ते हैं और भाषा कौशलों का विकास करते हैं।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय, करोखी, ऊखीमठ, रुद्रप्रयाग में अध्यापिका हैं)

प्रवाह हेतु आमंत्रण

आप जानते ही हैं कि प्रवाह में शिक्षक साथियों के अनुभव एवं उनकी रचनाएं भी प्रकाशित की जाती हैं। शिक्षक साथी अपने लेख अथवा बच्चों की रचनाओं को प्रकाशन हेतु भेजना चाहें तो निम्न पतों पर प्रेषित करें।

- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, 360 (ख), आमवाला तरला, देहरादून, उत्तराखण्ड–248001**
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, कुड़ियाल भवन, भटवाड़ी रोड, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड–249193**
  फोन/फैक्स : 01374–222505
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, वार्ड नं.3, नियर गुरुद्वारा, दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड**
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, लोअर मॉल रोड, कर्नाटक खोला, नियर डायट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड–263601**

ई–मेल: pravah@azimpremjifoundation.org